राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

समग्र शिक्षा

03 अगस्त 2021 - 10 दिसम्बर 2021

CM RISE
नए क्षितिज

डिजिटल
शिक्षक
प्रशिक्षण

हमारे शिक्षक हमारे प्रेरणास्रोत

भाग 3

...के सहयोग से

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

NISHTHA ONLINE

CM RISE नए क्षितिज | डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

हमारे शिक्षक, हमारे प्रेरणास्त्रोत
एक परिचय

शिक्षकों के कौशल उन्नयन हेतु मध्य प्रदेश में **सी एम राइज़ डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम** संचालित किया जा रहा है तथा प्रशिक्षणों पर शिक्षकों के अनुभवों व विचारों को साझा करने हेतु राज्य स्तर से डेशबोर्ड प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस डैशबोर्ड पर प्रतिदिन संचालित कोर्स में शिक्षकों का पंजीयन एवं कोर्स पूर्णता के प्रतिशत की स्थिति और शिक्षकों के विचारों को संकलित किया जाता है।

राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा पूर्व में इस पुस्तिका के दो भाग प्रकाशित किए जा चुके हैं, प्रथम भाग सी एम राइज कार्यक्रम के पहले अठारह कोर्स पर तथा दूसरा भाग निष्ठा के अठारह प्रशिक्षणों पर जारी किया जा चुका है।

इसी प्रक्रिया को निरंतर रखते हुए **'घर - सीखने का संसाधन' कोर्स शृंखला तथा 'निष्ठा FLN 3.0' प्रशिक्षणों** के पहले चार कोर्स हेतु जारी डैशबोर्ड पर प्रकाशित शिक्षकों के विचार इस पुस्तिका में समाहित किए जा रहे हैं। पहली दोनों पुस्तिकाओं में लगभग 150 शिक्षकों के विचारों को सम्मिलित किया गया था। इस पुस्तिका में 45 शिक्षकों के विचारों को स्थान प्रदान किया जा रहा है।

प्रदेश के शिक्षकों द्वारा इस प्रयास को प्रशंसा मिली है, उनके अनुसार यह प्रयास प्रदेश के शिक्षकों के अनुभवों एवं विचारों के आदान प्रदान हेतु एक नवाचारी प्रयास है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षकों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने हेतु एक मंच मिला है।

हम इन शिक्षकों को कार्यक्रम के प्रति उनके समर्पण और समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि आप शिक्षा के माध्यम से देश के भविष्य को दिशा देने का अपना कार्य जारी रखेंगे, क्योंकि **हमारे शिक्षक ही हमारे प्रेरणास्त्रोत** हैं

समग्र शिक्षा

peepul™

DIKSHA

NIC

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

CM RISE
नए क्षितिज
डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

घर-सीखने का संसाधन
प्रशिक्षण शृंखला

'घर – सीखने का संसाधन'

शृंखला पर

शिक्षकों के विचार

समग्र शिक्षा

म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

peepul™

DIKSHA

NIC

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

CM RISE नए क्षितिज | डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

' घर – सीखने का संसाधन '

घर-सीखने का संसाधन
प्रशिक्षण शृंखला

लॉकडाउन अवधि के दौरान यह देखा गया कि बच्चे घर पर भी सीख सकते हैं, हालांकि, घर पर प्रभावी ढंग से सीखने-सिखाने के लिए विशिष्ट कौशलों की आवश्यकता होती है। इन्हीं कौशलों से शिक्षकों को परिचित करवाने तथा बच्चों को घर से ही सीखने-सिखाने में सहायता करने के उद्देश्य से सीएम राइज़ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत "घर-सीखने का संसाधन" नामक 3-भाग की एक कोर्स श्रृंखला शुरू की गई है। यह कोर्स श्रृंखला शिक्षकों को घर पर रोज़मर्रा के संसाधनों का उपयोग करके विभिन्न कक्षाओं के बच्चों के लिए आकर्षक गतिविधियों का संचालन करने में सहायता प्रदान की। इस कोर्स श्रृंखला के तीन भाग हैं-

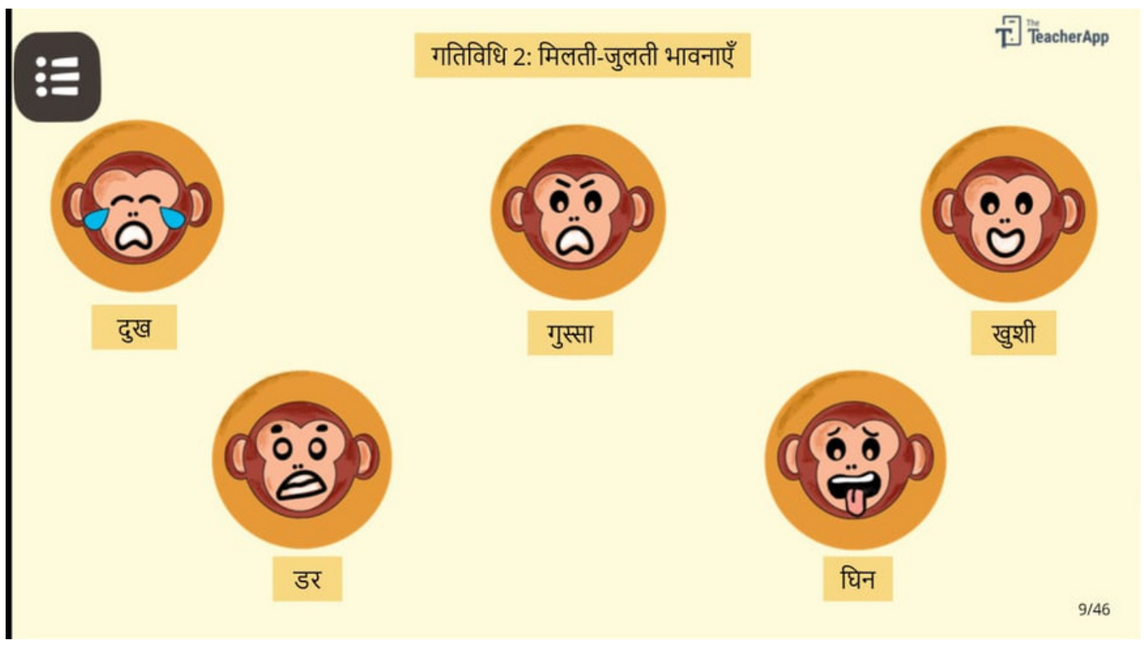

शृंखला के **पहले कोर्स- "हम और हमारा समाज"** में, बच्चों की भावनाएं एवं लैंगिक पूर्वाग्रहों के प्रति उनकी जागरूकता विकसित करने हेतु विभिन्न गतिविधियों के बारे में बात की गयी है।

शृंखला के **दूसरे कोर्स-"ज्ञान का खज़ाना"** में, बच्चों के ज्ञान कोष को बढ़ाने पर ध्यान देते हुए अच्छे 'स्वास्थ्य' और 'कहानी' संबंधित विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया गया है।

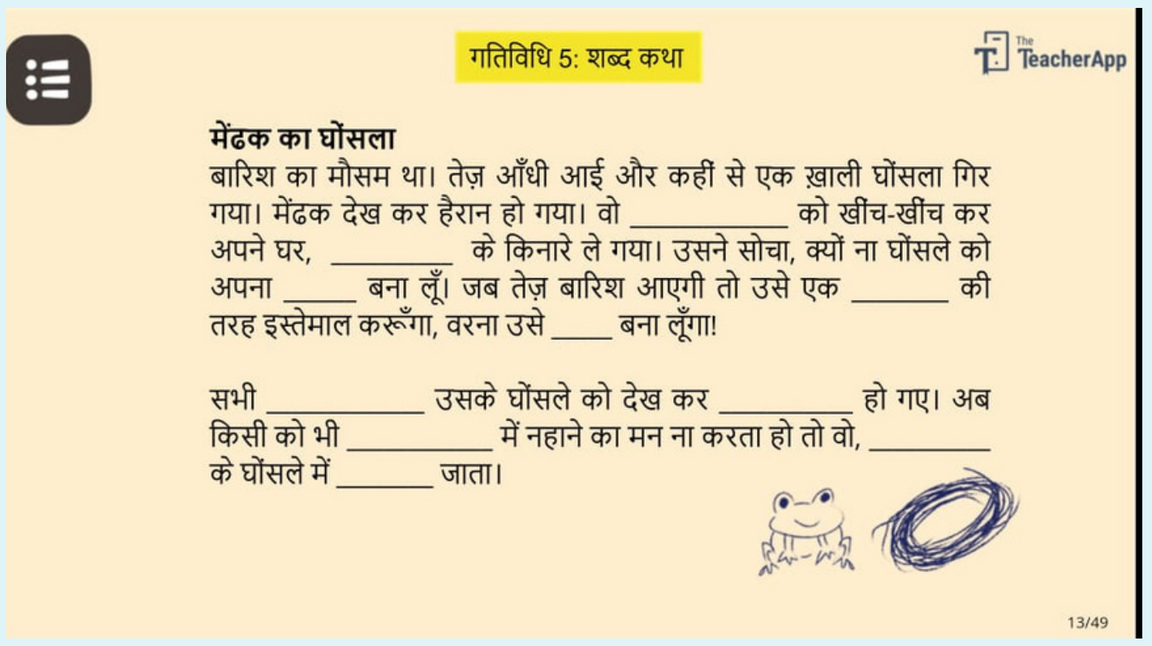

शृंखला के **तीसरे कोर्स "व्यावहारिक गणित और सूझ-बूझ"** में बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल विकास पर ध्यान देते हुए 'संख्या संक्रियाओं' और 'पहेली' संबंधित विभिन्न गतिविधियों को समझाया गया है।

बच्चों को पढ़ाई की मुख्याधारा से जोड़े रखने के लिए- कहानियां, आडियो, वीडियो, पीडीएफ, लेखन, text message, व्हाट्सएप आदि का सहयोग लिया गया है, जो कि एक नवाचारी प्रयोग है। बच्चा अपने परिवेश से कुछ न कुछ सीखता है, आवश्यकता है उसे व्यवस्थित करने की। कॉमिक, कहानी, जीवनी, दैनिक जीवन पर आधारित कहानियों से बच्चों की समझ को और अधिक विकसित किया जा सकता है, इसमें निश्चित ही शिक्षकों के सहयोग की आवश्यकता है। जिससे बच्चों के आकलन में आसानी होगी चूँकि परिवार में सदस्यों/मेंटर का सहयोग मिलेगा साथ ही रुब्रिक के सहयोग से बच्चों का आकलन किया जा सकेगा।

सुन्दर लाल सूर्यवंशी, मा.शिक्षक, शा.मा.शा. चिखली मुकासा, छिंदवाड़ा

कोर्स 2 ज्ञान का खजाना कोर्स गतिविधि 5 शब्द कथा के अंतर्गत मेंढक का घोंसला का स्क्रीनशॉट लेकर बच्चों को भेजा। बच्चों ने रिक्त स्थान भर कर वापस व्हाट्सएप में सेंड किया। इससे बच्चों में तार्किक एवं कल्पना शक्ति का विकास हुआ। अभिभावकों ने भी बच्चों का साथ दिया। बच्चे हमेशा उत्सुक रहते हैं कब मैडम हमें व्हाट्सएप पर कुछ कार्य करने के लिए भेजें। हम हमेशा बच्चों को गृह कार्य और कोई न कोई गतिविधि देते रहते हैं।

साधना बैरागी, शा. प्रा. विद्यालय कुंडला, जावद, नीमच

ज्ञान का खजाना कोर्स से मैंने जाना कि शिक्षक व अभिभावकों के बीच साझेदारी से घर आधारित शिक्षण कार्य का क्रियान्वयन सुचारू रूप से होगा। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी कल्पना का उपयोग कर, कहानी का निर्माण कर सकेंगे एवं बच्चे स्वयं व अपने आसपास के लोगों के स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य से जुड़ी अच्छी आदतों के प्रति जागरूक होंगे। जो कि बच्चों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

दिलीप सिंह कटरे, प्राथ. शिक्षक, प्रा.शा.झोंझ, कुण्डम, जबलपुर

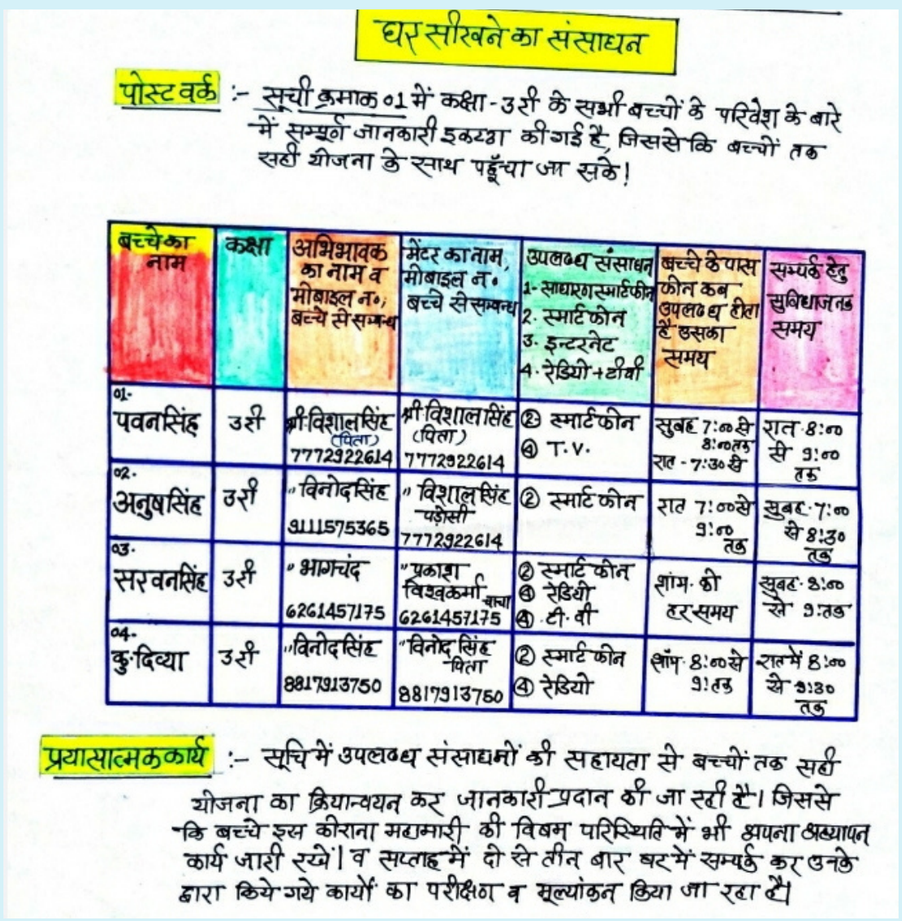

घर सीखने का संसाधन

पोस्ट वर्क :- सूची क्रमांक 01 में कक्षा-उरी के सभी बच्चों के परिवेश के बारे में सम्पूर्ण जानकारी इकट्ठा की गई है, जिससे कि बच्चों तक सही योजना के साथ पहुँचा जा सके।

बच्चे का नाम	कक्षा	अभिभावक का नाम व मोबाइल नं., बच्चे से सम्बन्ध	मेंटर का नाम, मोबाइल नं. बच्चे से सम्बन्ध	उपलब्ध संसाधन 1-साधारण स्मार्टफोन 2. स्मार्टफोन 3. इन्टरनेट 4. रेडियो + टीवी	बच्चे के पास फोन कब उपलब्ध होता है उसका समय	सम्पर्क हेतु सुविधाजनक समय
01. पवन सिंह	उरी	श्री विशाल सिंह (पिता) 7772922614	श्री विशाल सिंह (पिता) 7772922614	② स्मार्टफोन ④ T.V.	सुबह 7:00 से 8:00 तक रात - 7:30 से	रात 8:00 से 9:00 तक
02. अनुष सिंह	उरी	" विनोद सिंह 9111575365	" विशाल सिंह पड़ोसी 7772922614	② स्मार्टफोन	रात 7:00 से 9:00 तक	सुबह 7:00 से 8:30 तक
03. सरवन सिंह	उरी	" भागचंद 6261457175	"प्रकाश विश्वकर्मा चाचा 6261457175	② स्मार्टफोन ④ रेडियो ④ टी.वी	शाम को हर समय	सुबह 8:00 से 9:00 तक
04. कु. दिव्या	उरी	"विनोद सिंह 8817913750	"विनोद सिंह पिता 8817913750	② स्मार्टफोन ④ रेडियो	सॉय 8:00 से 9:00 तक	रात में 8:00 से 9:30 तक

प्रयासात्मक कार्य :- सूचि में उपलब्ध संसाधनों की सहायता से बच्चों तक सही योजना का क्रियान्वयन कर जानकारी प्रदान की जा रही है। जिससे कि बच्चे इस कोरोना महामारी की विषम परिस्थिति में भी अपना अध्ययन कार्य जारी रखें। व सप्ताह में दो से तीन बार घर में सम्पर्क कर उनके द्वारा किये गये कार्यों का परीक्षण व मूल्यांकन किया जा रहा है।

जबलपुर जिले के शिक्षक दिलीप सिंह कटरे द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

CM Rise डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत घर सीखने का संसाधन श्रृंखला में ज्ञान का खजाना कोर्स की पड़तालों द्वारा जाना कि कविता के माध्यम से बच्चों को अपने परिवेश में रहकर ही जो ज्ञान मिलता है उसे छोटे छोटे प्रयासों द्वारा बड़े ही रोचक तरीके से बताया गया है। इससे हमने जाना कि ऐसी ही गतिविधियों द्वारा बच्चे मजेदार तरीकों से सीख सकते हैं।

सीमा सोनी, मा. वि. देवली पिपलोन, बडौद, जिला - आगर मालवा

ज्ञान का खजाना कोर्स में पड़ताल- 1 में कहानी कविता के माध्यम से घर रह कर एवं अपने आसपास के परिवेश में उपलब्ध संसाधनों से भी बच्चों के शिक्षण कौशलों में विकास किया जा सकता है। बच्चों को वर्तमान स्थिति में तनाव मुक्त कर कहानी, कविताओं के माध्यम से कल्पना शक्ति को विकसित किया जा सकता है, इससे विभिन्न गतिविधियों में बच्चों की सक्रीय भागीदारी सुनिश्चित की जा सकेगी।

गोविन्द सिंह पटेल, प्रा.शिक्षक शा.एकीकृत मा.शाला सुनाचर, शाहपुरा, जबलपुर

सीएम राइज शिक्षक प्रशिक्षण हम शिक्षकों के लिए नई सोच, नई ऊर्जा के साथ अपने शिक्षकीय कार्य करने की प्रेरणा देता है। पूर्व सत्र में हुए सीएम राइज व निष्ठा के प्रशिक्षण से अलग-अलग तरीकों में हम अपने आपको प्रस्तुत करने का कार्य कुशलता से कर पा रहे हैं। इस वर्ष शुरू हुई, प्रशिक्षण श्रृंखला में घर सीखने का संसाधन समन्वयवादी सोच को रेखांकित करता है, वह हमें और अधिक सक्रिय होने का मार्ग दिखा रहा है। ज्ञान का खजाना प्रशिक्षण इस दिशा में हमें और अधिक रचनाशील बनाएगा।

पुनीता सिंह, मा. शिक्षक शा. पूर्व मा. वि. सोनवर्षा, सोहावल, सतना

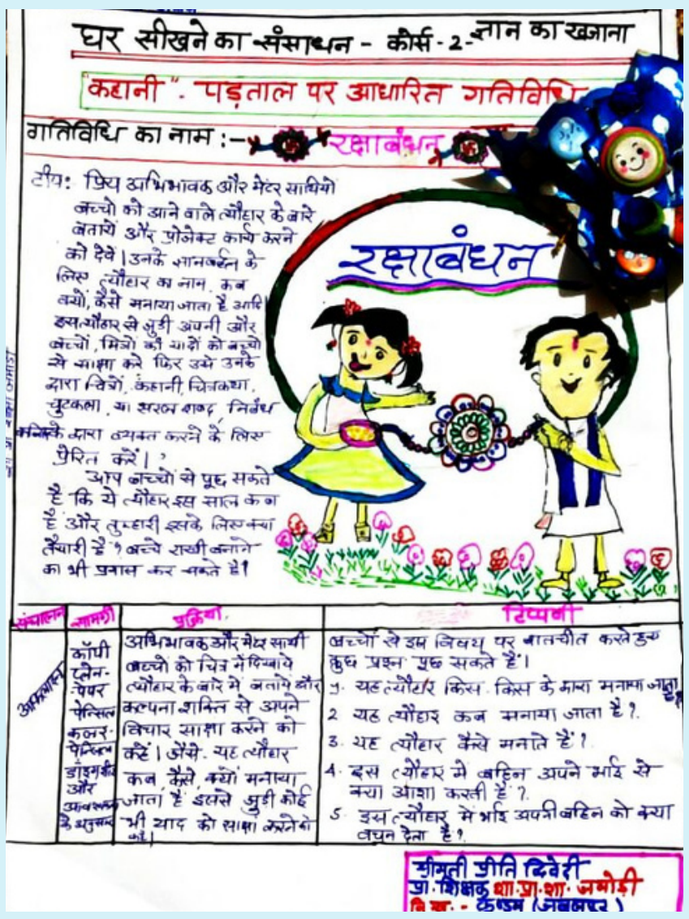

जबलपुर जिले की शिक्षिका प्रीति द्विवेदी द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

घर- सीखने का संसाधन कोर्स 2 में हमने जाना कि हम बच्चों को कुछ ऐसी गतिविधियों में संलग्न कर सकते हैं जिससे वह अपने घर का सीखने के एक संपूर्ण संसाधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए अपने कौशलों को सुधार करेंगे साथ ही नए कौशल भी सीख सकेंगे। इस मॉड्यूल में दो कहानियों के बीच तुलना करते हुए उनमें क्या क्या समानता व असमानता है इस कौशल को भी सिखाया है। हमने इस मॉड्यूल में जाना कहानियों से बच्चों में कल्पना करने के कौशल का विकास होता है।

संध्या साहू, मा. शिक्षक शा. मा. शाला खांड संकुल ढाना, सागर

“ज्ञान का ख़ज़ाना” में पॉडकास्ट "कक्षा में आलोचना नहीं विवेचना" ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वास्तव में बच्चे फूल की तरह कोमल होते हैं। यदि उन्हें घर में या बाहर शाला में अपनापन नहीं मिलता, इन्हें तिरस्कृत किया जाता है, उनकी बात-बात पर आलोचना की जाती है तो वे कुछ सीख नहीं पाते, हतोत्साहित होते रहते हैं। अतः बच्चों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करने में पालकों के साथ-साथ शिक्षकों को बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। इसलिए कक्षा में बच्चों की आलोचना नहीं विवेचना की जानी चाहिए।

आकाँक्षा वर्मा, एकीकृत मा.शा.करहैया शहपुरा, जबलपुर

“ज्ञान का ख़ज़ाना” कोर्स से मैंने जाना कि बच्चों में कल्पनाशक्ति का विकास करने में कहानी, कविताएँ और आसपास के परिवेश में उपलब्ध संसाधन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों में सामाजिक प्रतिक्रिया देने के गुणों का विकास भी इनके माध्यम से किया जा सकता है साथ ही पालकों एवं शिक्षकों को ध्यान रखना होगा, कि बच्चों की आलोचना के स्थान पर विवेचना करनी चाहिए जिससे बच्चे प्रोत्साहित हो कर कक्षा और समाज में अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

सरिता श्रीवास्तव, मा. शाला इस्लाम नगर विकासखण्ड फंदा ग्रामीण, भोपाल

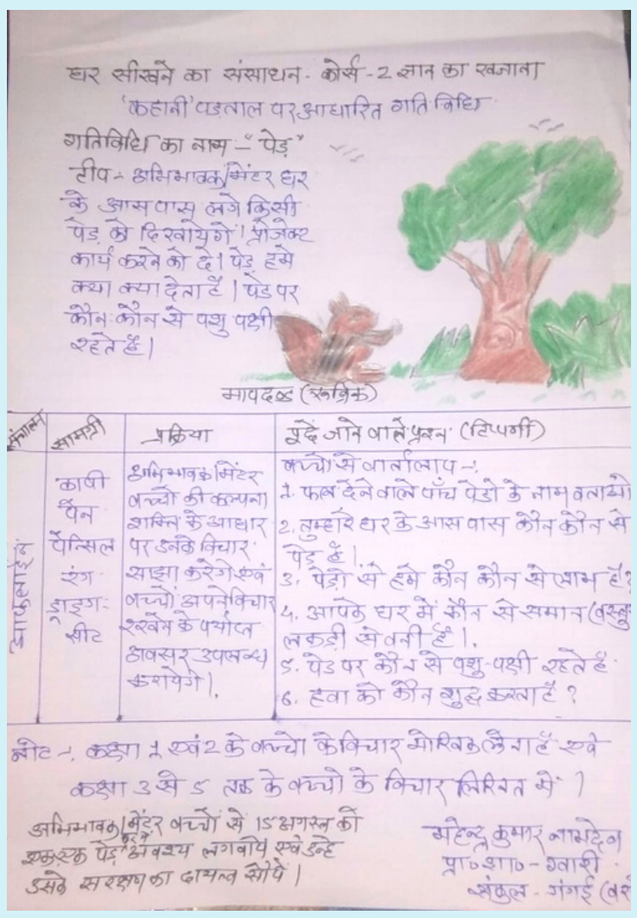

घर सीखने का संसाधन- कोर्स-2 ज्ञान का खजाना
'कहानी' पड़ताल पर आधारित गतिविधि
गतिविधि का नाम – "पेड़"
टीप- अभिभावक/मेंटर घर के आसपास लगे किसी पेड़ को दिखायेंगे। प्रोजेक्ट कार्य करने को दें। पेड़ हमे क्या क्या देता है। पेड़ पर कौन कौन से पशु पक्षी रहते हैं।

मापदण्ड (रूब्रिक)

संसाधन	सामग्री	प्रक्रिया	पूछे जाने वाले प्रश्न (टिप्पणी)
आसपास का पेड़	कापी पेन पेन्सिल रंग ड्राइंग शीट	अभिभावक/मेंटर बच्चों की कल्पना शक्ति के आधार पर उनके विचार साझा करेंगे एवं बच्चों अपने विचार रखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करायेंगे।	बच्चों से वार्तालाप – 1. फल देने वाले पाँच पेड़ों के नाम बताओ 2. तुम्हारे घर के आस पास कौन कौन से पेड़ है। 3. पेड़ों से हमे कौन कौन से लाभ है? 4. आपके घर में कौन से समान (वस्तु) लकड़ी से बनी है। 5. पेड़ पर कौन से पशु-पक्षी रहते है 6. हवा को कौन शुद्ध करता है?

नोट –, कक्षा 1 एवं 2 के बच्चों के विचार मौखिक लेगें एवं कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों के विचार लिखित में।

अभिभावक/मेंटर बच्चों से 15 अगस्त को एक-एक पेड़ अवश्य लगवायें एवं इन्हें उसके संरक्षण का दायित्व सौंपे।

महेन्द्र कुमार नामदेव
प्रा॰ शा॰ – [illegible]
संकुल - गंगई [illegible]

शिक्षक महेंद्र कुमार नामदेव द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

"ज्ञान का ख़ज़ाना" कोर्स के माध्यम से मैंने जाना कि बच्चे अपने आस-पास की वस्तुओं को जोड़कर कैसे अपनी कल्पनाशक्ति का विकास कर कहानी का निर्माण कर पाते हैं एवं स्वास्थ्य कैलेंडर का रोज़ उपयोग कर बच्चों में अच्छी आदतों का विकास किया जा सकता है।

पंकज विश्वकर्मा, शासकीय प्राथमिक शाला सरमनिया, विकासखंड मानपुर, उमरिया

"घर सीखने का संसाधन" कोर्स-2 "ज्ञान का ख़ज़ाना" वास्तव में हमारे लिए ढेर सारी जानकारियों का ख़ज़ाना लेकर आया है। इस कोर्स के द्वारा हमने जाना कि किस प्रकार से कहानियाँ, घर आधारित शिक्षण हेतु हमारे लिए उपयोगी हैं। कहानियों के द्वारा छात्रों में भाषा कौशल के साथ-साथ कल्पनाशीलता का विकास होता है और ज्ञान के साथ उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। प्रतिक्रिया या फीडबैक देने के लिए सराहना, सुधार के बिंदु और सराहना का सैंडविच मॉडल, मुझे बहुत उपयोगी लगा। पॉडकास्ट की सबसे ज़रूरी बात आलोचना नहीं विवेचना कीजिए जैसी महत्त्वपूर्ण जानकारी हमारे शिक्षण की यात्रा में अत्यंत उपयोगी साबित होंगी।

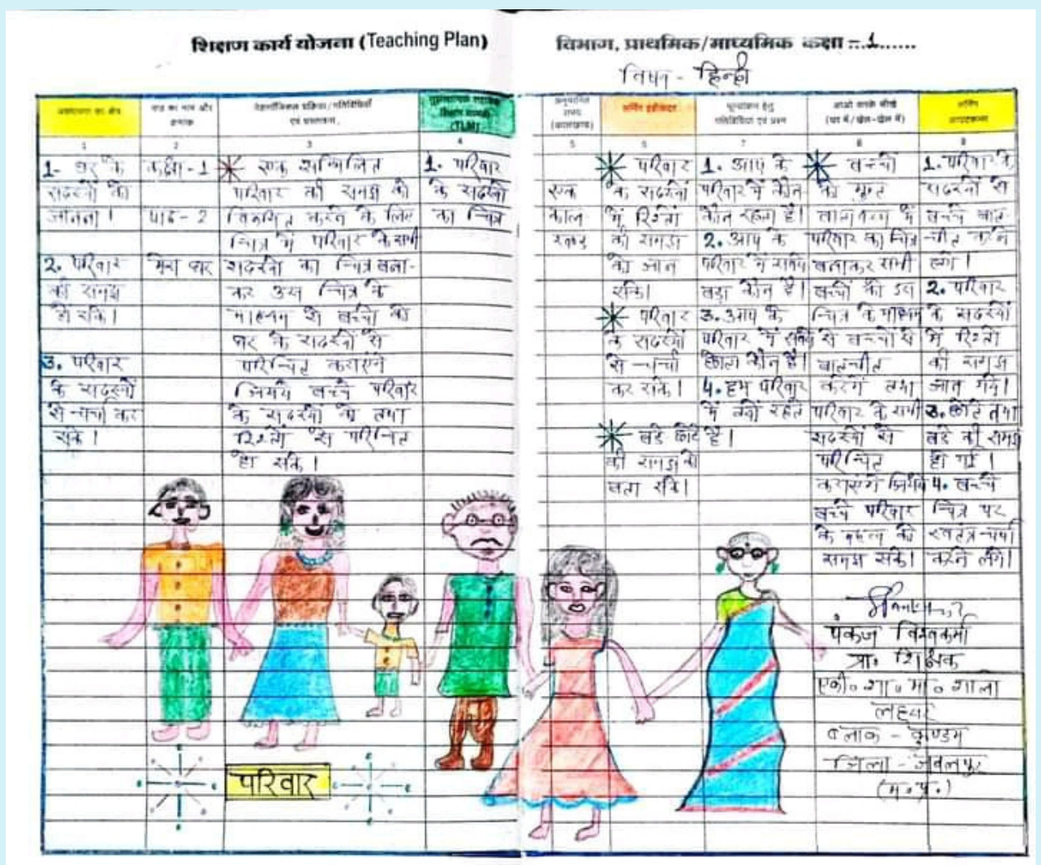

उषा दुबे, मा. शिक्षक मा. शाला हर्रई पूर्व, विकासखण्ड-बैढ़न, सिंगरौली

"ज्ञान का ख़ज़ाना" इस कोर्स में आलोचना नहीं विवेचना के साथ सीखने के अर्थपूर्ण मौक़े देकर सीमित संसाधनों में बच्चों को सिखाने का अवसर प्राप्त हुआ है, साथ ही बच्चों की सक्रिय भागीदारी, अभिभावकों के सहयोग और स्थानीय परिवेश से जोड़ते हुए सिखाना सार्थक सिद्ध हुआ है। हम कोर्स की गतिविधि को बच्चों के साथ अनवरत रूप से साझा करने का सिलसिला जारी रखेंगे।

शैलेन्द्र सिंह बालेन्दु, प्रा. शिक्षक शा. प्रा. शाला अगरियान टोला कंजवार मझौली, सीधी

उमरिया जिले के शिक्षक पंकज विश्वकर्मा द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

घर आधारित सीखने की प्रक्रिया में, घर पर रोज़मर्रा के संसाधनों का उपयोग कर, बच्चे आकर्षक गतिविधियों से सीखने की ओर अग्रसर हैं। बच्चों का परिवेश से जुड़ाव, उनकी सक्रिय भागीदारी, कहानी सुनना और कहानियाँ गढ़ना आदि से बच्चों की कल्पनाशक्ति का विकास कर रहे हैं। इस कोर्स में बच्चों के कार्यों की कैसे प्रशंसा की जाए, बहुत अधिक प्रभावित करती है।

कंचन पासी (माध्यमिक शिक्षक) झाँसीघाट(गोटेगांव) जिला- नरसिंहपुर

सीएम राइज़ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में "घर - सीखने का संसाधन" कोर्स श्रृंखला के दूसरे कोर्स "ज्ञान का ख़ज़ाना" में शिक्षक प्रशिक्षित होकर बच्चों को कहानी एवं स्वास्थ्य और सुरक्षा की विभिन्न गतिविधियों का उपयोग करने में सहायक होंगे। जहाँ एक और बच्चे पड़ताल के माध्यम से स्वयं कार्य करके जागरूक बनेंगे, उनकी दिनचर्या को व्यवस्थित कर पाएँगे तथा अपनी आदतों पर ध्यान देते हुए स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगे। वहीं दूसरी ओर "हमारी अपनी कहानी" गतिविधि के द्वारा बच्चों की कल्पनाशक्ति का विकास कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सकेगा । कोरोना काल की इस विकट परिस्थिति में जब बच्चे अपने घर पर ही हैं, मैं इन गतिविधियों को बच्चों के साथ साझा कर प्रशिक्षण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सफल प्रयास करूंगा।

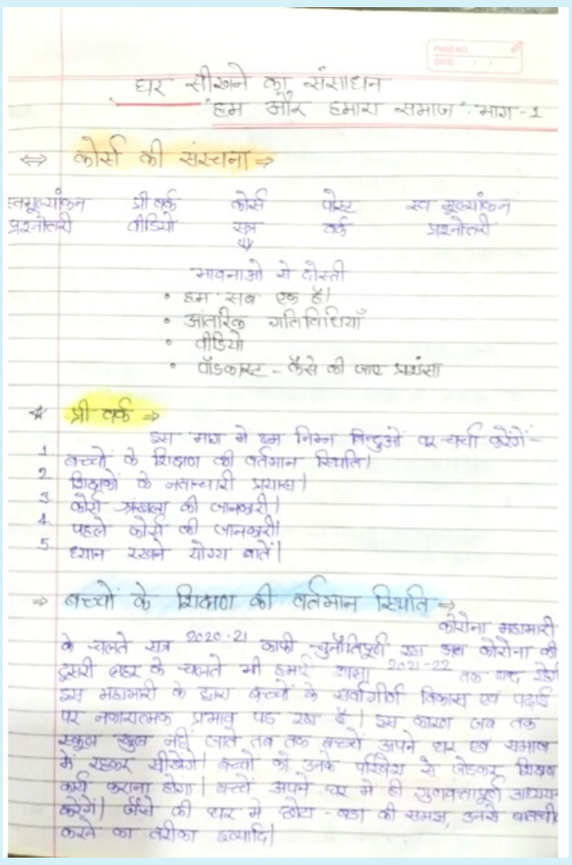

हितेश दुबे, प्रा. शाला माँगरोला, देवास, जिला देवास

“ज्ञान का ख़ज़ाना” कोर्स से मैंने जाना कि कोरोना महामारी में भी शिक्षक व अभिभावक के मध्य आपसी तालमेल में शिक्षण कार्य का सुचारु रूप से क्रियान्वयन कर सकते हैं। इस कोर्स से हमें यह भी सीख मिली कि बच्चे सुनेंगे तो भूल सकते है और देखेंगे तो केवल याद रखेंगे पर यदि स्वयं करेंगे तो सीख जाएँगे, जो जीवनपर्यंत नहीं भूलेंगे। कहानी निर्माण, चित्रकथा, स्वास्थ्य गतिविधियों से बच्चों की कल्पनाशीलता का विकास होगा, जिससे उनकी स्मरण शक्ति तीव्र होगी।

प्रीति द्विवेदी, प्रा.शिक्षक, शा.प्रा.शाला जमोड़ी, विकासखंड कुण्डम, जबलपुर

मंदसौर जिले की शिक्षिका वंदना परमार द्वारा निर्मित कोर्स डायरी

"घर-सीखने का संसाधन" कोर्स-3, व्यावहारिक गणित और सूझबूझ: इस कोर्स के माध्यम से मैंने जाना कि किस प्रकार पोर्टफ़ोलियो के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा की जा रही गतिविधियों को हम फ़ोल्डर बनाकर रख सकते हैं। मैंने इन गतिविधियों को कार्य रूप में भी परिणित किया, जब मैंने बच्चों के अभिभावकों से संपर्क किया तो उनके बच्चों के किए कार्यों को दिखाया, जिससे उन्हें आत्मिक ख़ुशी हुई। बच्चों से सम्पर्क के दौरान मैंने उन्हें कुछ गणितीय पहेलियाँ भी बताई, जिसमें उन्हें बहुत मज़ा आया और उन्होंने अपने साथियों के साथ इसे खेल के रूप में साझा किया। इस प्रकार हम विद्यार्थियों को गणितीय पहेलियों के माध्यम से दैनिक जीवन में गणित के उपयोग साझा कर सकते हैं।

सारिका गुप्ता, मा. शिक्षक, शा. मा. शाला, मझगवां, ब्लॉक बड़वारा, कटनी

कोर्स -2 "घर सीखने का संसाधन -ज्ञान का ख़ज़ाना" चैट शाला में हमने जाना "आलोचना नहीं विवेचना करें" बच्चों के प्रति हमारा संवेदनशील होना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि हम समझ ही नहीं पाते हैं कि हमारे आलोचना भरे कठोर शब्दों से बाल मन कब आहत हो जाता है। घर एवं विद्यालय दोनों जगह बच्चों के कार्यों की सही ढंग से विवेचना किया जाना आवश्यक है। दोनों जगह बच्चों के अच्छे कार्यों की प्रशंसा हो, ताकि वे उत्साह पूर्वक अपना कार्य बेहतर ढंग से कर सकें।

कुसुम पाठक, शासकीय प्राथमिक शाला धौरई, विकासखंड -पाली, उमरिया

सभी बच्चे कहानियों से आसानी से जुड़ जाते हैं, क्योंकि कहानियों में रोचकता के साथ जिज्ञासा भाव उत्पन्न करने की क्षमता होती है। किसी पाठ्यवस्तु को सिखाने के लिए कहानी बहुत अच्छा माध्यम है। कहानी से बच्चे प्रेरणा लेते हैं एवं उनके दिलोदिमाग में कहानी का सार तत्व लंबे समय तक बना रहता है। कहानी से बच्चों की कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास भी होता है। बच्चे कहानी कह कर भी अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आराधना दुबे, प्रा. शिक्षक, शा. प्रा. शाला गुंदरई वि.ख.- शहपुरा, जबलपुर

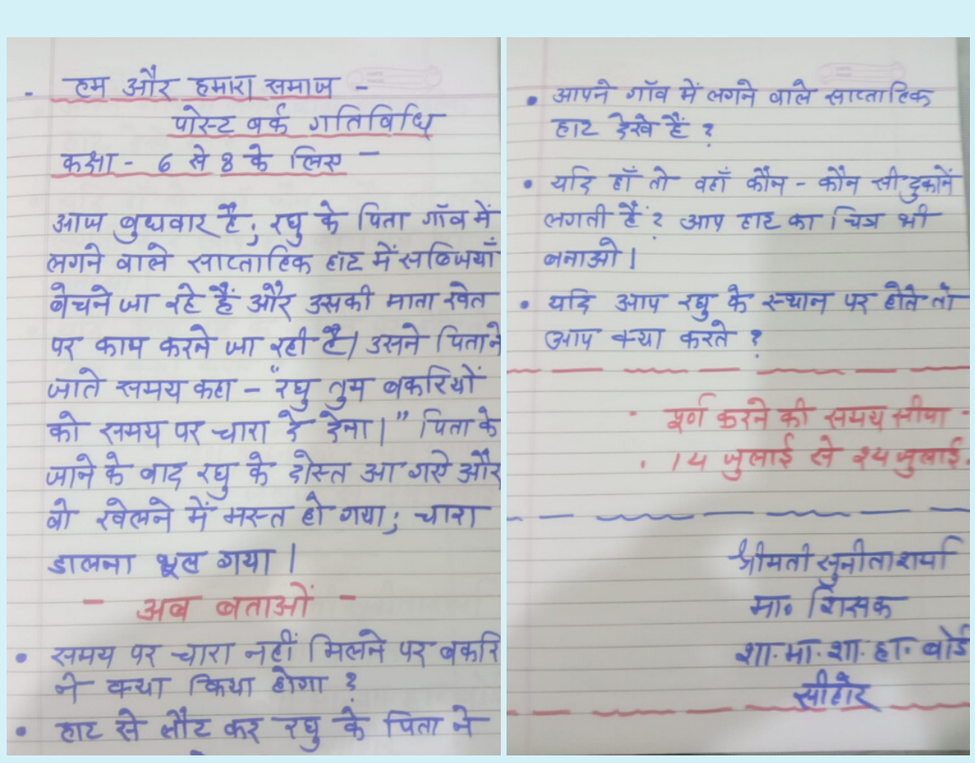

सीहोर जिले की शिक्षिका सुनीता शर्मा द्वारा निर्मित कोर्स पोस्टवर्क गतिविधि

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

CM RISE नए क्षितिज | डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

कहानी सुनने-सुनाने से बच्चों में आत्म विश्वास बढ़ता है, नई-नई जानकारियाँ हासिल होती हैं, विभिन्न भावनाओं को समझने और उनसे जुड़ने के मौक़े मिलते हैं, तर्क-शक्ति का विकास होता है, कल्पनाशीलता के साथ कहानी में सम्मिलित पात्रों की परिस्थितियों को जानने की समझ के साथ स्वयं पुस्तकों की कहानियाँ वकविताएँ पढ़ने-लिखने तथा विभिन्न चित्रों को देखकर बनाने का प्रयास करते हैं। कहानियों से प्रेरित होकर वे अपनी धुन में सही-ग़लत का अंदाज़ा लगाकर नई सीख के साथ दैनिक जीवन में आगे बढ़ते हैं ।

जगदीश गौर, प्रा. शाला मिनावा माल, विकासखंड बलड़ी, जिला खंडवा

“घर-सीखने का संसाधन” कोर्स-2 ज्ञान का ख़ज़ाना प्रशिक्षण में पड़ताल 'कहानी' से संबंधित चर्चा और गतिविधि ने मुझे बहुत प्रभावित किया, क्योंकि बच्चे कहानी के माध्यम से पढ़ाई में विशेष रुचि लेते हैं। कहानी वो विधा है, जो उनके अंदर की झिझक को दूर कर, उनको अपने विचार आपके सम्मुख रखने में विशेष भूमिका निभाती है।

दक्षिणा तिवारी, मा.शिक्षक, मा.शा. बटुरा, ब्लॉक बुढार, शहडोल

CM राइज़ डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षण, “घर सीखने के संसाधन” कोर्स-3 व्यावहारिक गणित और सूझबूझ की गतिविधि संख्या-लड़ी, बच्चों को आसानी से अंक पहचान करवाने में बहुत उपयोगी है। "नीनू बंदर की कहानी" से बच्चों को रोचक तरीक़े से “जोड़” की अवधारणा को सिखाया जा सकता है तथा "कितने मोती बचे" गतिविधि बच्चों के लिये बहुत रोचक और उपयोगी है, इससे बच्चों को आसानी से घर पर उपलब्ध बीज, कंकड़ और मोती से “घटाव” की अवधारणा को समझा सकेंगे।

नीलकमल आर्य, सहायक अध्यापक, शा मा वि पावडा खुर्द, जिला नीमच

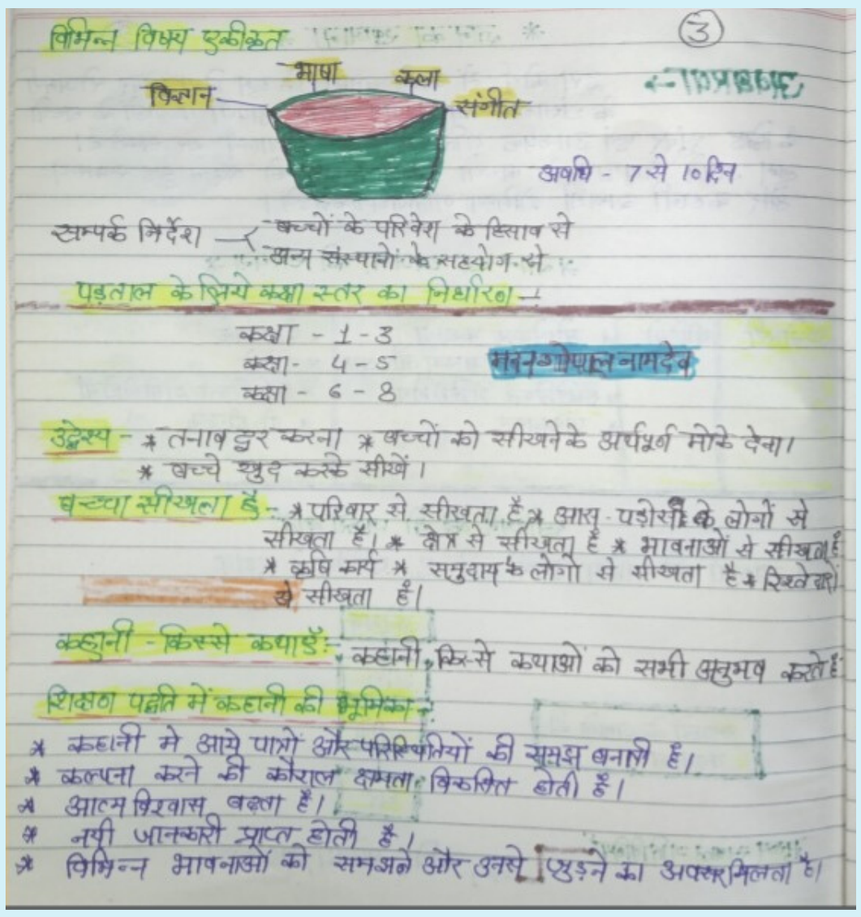

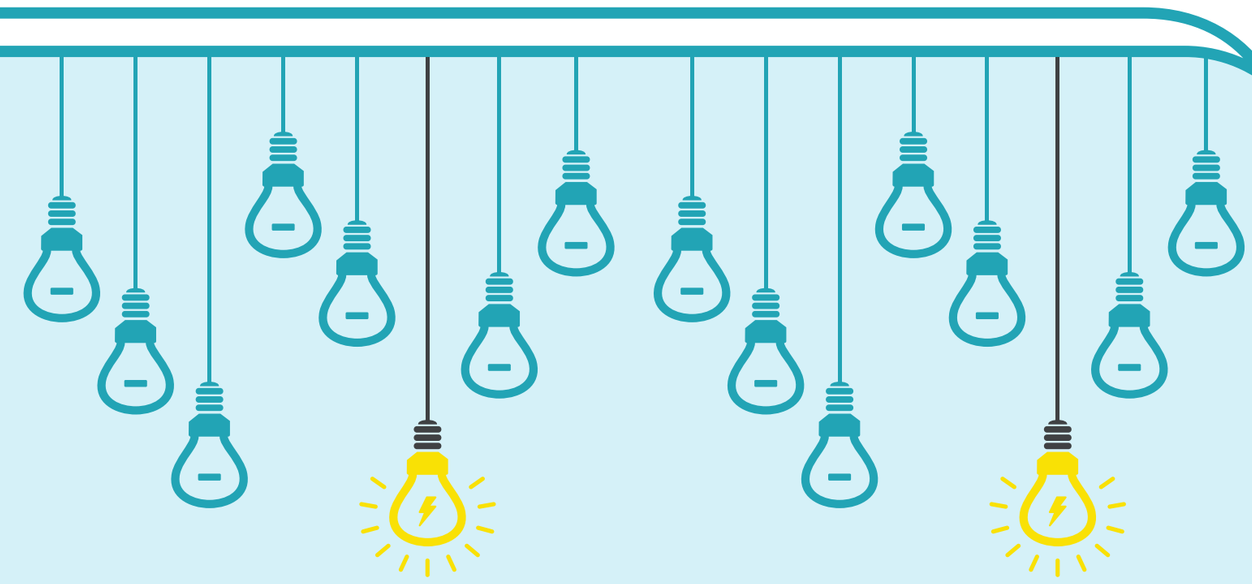

भोपाल जिले के शिक्षक मदनगोपाल नामदेव द्वारा निर्मित कोर्स डायरी

बच्चों को क्रमबद्ध, कम तथा स्पष्ट शब्दों में निर्देश देना बहुत प्रभावी हो रहा है। इससे बच्चे कार्य के प्रति रुचि प्रदर्शित कर रहे हैं, साथ ही इससे बच्चे अपने विचार अभिव्यक्त करने में भी सक्षम होंगे। बच्चों में नियमित दिनचर्या बना कर कार्य हेतु प्रोत्साहित करना भी प्रभावी होगा तथा स्वास्थ्य से जुड़ी आदतों की जानकारी देकर उन्हें इस विषय पर भी जागरूक बनाया जा सकता है ताकि बच्चे समाज में अपनी भूमिका सफलता पूर्वक निभा सकें ।

अंजली चौधरी, मा. शिक्षक, जनपद पूर्व माध्यमिक शाला शहपुरा, जिला डिंडोरी

‘ज्ञान का ख़ज़ाना' यह प्रशिक्षण, बच्चों की शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण को एक नई दिशा प्रदान करता है। इस कोर्स से हमने जाना कि वर्तमान समय में अभिभावकों और शिक्षकों की साझेदारी, बच्चों के विकास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है। पड़ताल 1 में बच्चे अपनी कल्पना-शक्ति का प्रयोग कर कहानी बना पाएँगे, वहीं पड़ताल 2 में स्वास्थ्य व सुरक्षा के माध्यम से बच्चों की स्वयं व आसपास के लोगों के स्वास्थ्य और उनसे जुड़ी आदतों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

राकेश सिन्नरकर, प्रधान अध्यापक, शा. मा. शाला खडोला, विकासखंड - जिला कटनी

संख्याओं एवं संक्रियाओं की समझ गणित का एक ज़रूरी हिस्सा है । बच्चों को संक्रियाओं की समझ बनाने एवं समझ को विकसित करने के लिए यह प्रशिक्षण विशेष सहायक है। प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात जब मैंने अपनी सीख के आधार पर बच्चों के साथ कार्य करना प्रारम्भ किया तो देखा बच्चे संख्याओं की समझ को अपनी असल ज़िंदगी से जोड़ पा रहे हैं और अपने कौशलों का अलग परिस्थितियों में इस्तेमाल कर पा रहे हैं।

रामकिशोर गर्ग, मा. शिक्षक, शा. मा. शाला सुनहरा, जिला पन्ना

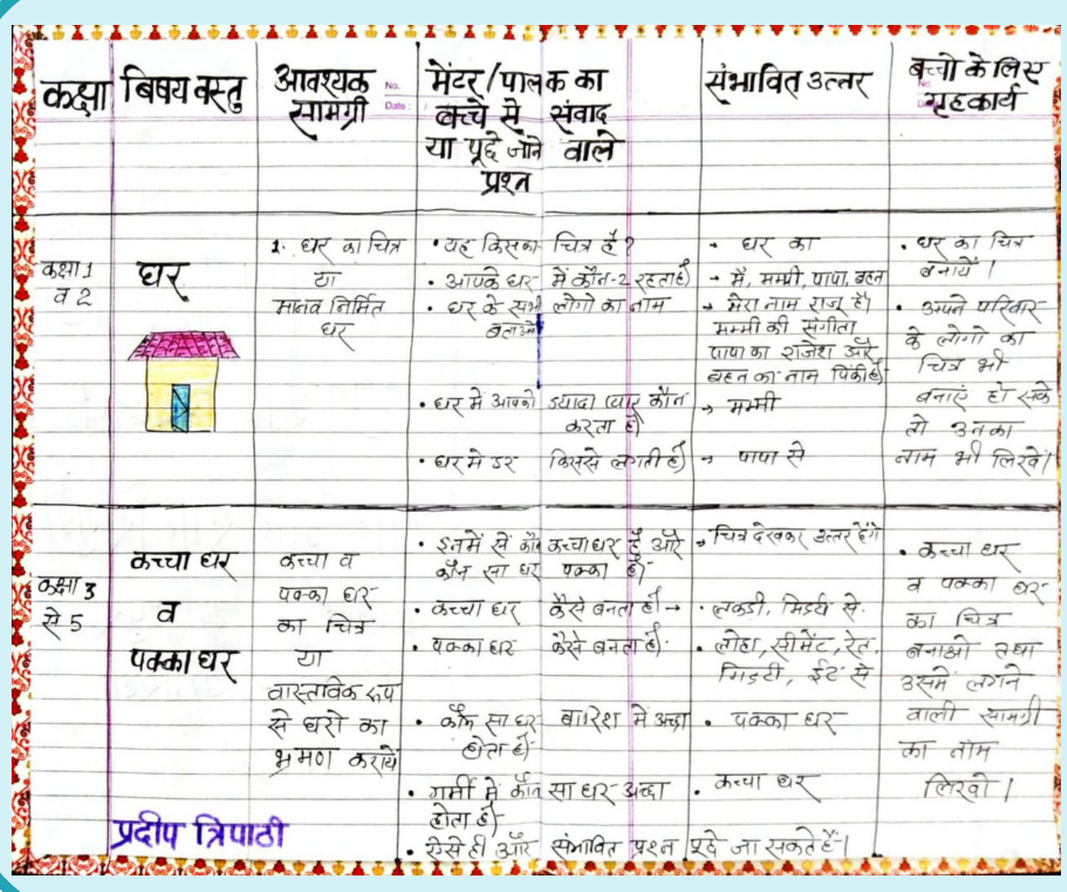

कक्षा	विषय वस्तु	आवश्यक सामग्री	मेंटर/पालक का बच्चे से संवाद या पूछे जाने वाले प्रश्न	संभावित उत्तर	बच्चो के लिए गृहकार्य
कक्षा 1 व 2	घर	1. घर का चित्र या मानव निर्मित घर	• यह किसका चित्र है ? • आपके घर में कौन-2 रहता है • घर के सभी लोगो का नाम बताओ • घर मे आपको ज्यादा प्यार कौन करता है • घर मे डर किससे लगती है	• घर का • मैं, मम्मी, पापा, बहन • मेरा नाम राजू है। मम्मी की संगीता पापा का शजेश और बहन का नाम पिंकी है • मम्मी • पापा से	• घर का चित्र बनाये । • अपने परिवार के लोगो का चित्र भी बनाएं हो सके तो उनका नाम भी लिखे।
कक्षा 3 से 5	कच्चा घर व पक्का घर	कच्चा व पक्का घर का चित्र या वास्तविक रूप से घरो का भ्रमण कराये	• इनमें से कौन कच्चा घर है और कौन सा घर पक्का है • कच्चा घर कैसे बनता है → • पक्का घर कैसे बनता है • कौन सा घर बारिश मे अच्छा होता है • गर्मी मे कौन सा घर अच्छा होता है • ऐसे ही और संभावित प्रश्न पूछे जा सकते हैं।	• चित्र देखकर उत्तर देंगे • लकड़ी, मिट्टी से. • लोहा, सीमेंट, रेत, मिट्टी, ईंट से • पक्का घर • कच्चा घर	• कच्चा घर व पक्का घर का चित्र बनाओ तथा उसमे लगने वाली सामग्री का नाम लिखो।

प्रदीप त्रिपाठी

उमरिया जिले के शिक्षक प्रदीप त्रिपाठी द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

"घर सीखने का संसाधन" में कोर्स -2 "ज्ञान का ख़ज़ाना," इस प्रशिक्षण में मैंने जाना कि हम अपने कुछ ऐसे कौशलों को विकसित कर सकते हैं जो बच्चों के घर पर शिक्षण प्रकिया में शिक्षण-सामग्री के रूप में काम आ सकें जैसे-मैं जब बच्चों को पेड़-पौधों के बारे में पढ़ाता हूँ तब पेड़-पौधों की पत्ती उनको हाथ में देकर ये प्रश्न पूछता हूँ जैसे- यह किस आकार की है?, यह किस काम आती है? आदि और इसके अलावा कुछ घरेलू चीज़ों को पाठ से जोड़ते हुए पूछता हूँ, इससे पढ़ाने में बहुत मदद मिलती है । इस प्रशिक्षण से मैंने फ़ीडबैक देने की प्रतिक्रिया को गहराई से जाना जैसे- बच्चों को पहले उनकी सकारात्मक चीज़ों के बारे में बताना चाहिए, उन्होंने कितना अच्छा काम किया है इसके लिए उनको सराहना चाहिए, उसके बाद कहाँ उन्हें सुधार करना है इस पर उनके साथ चर्चा करनी चाहिए आदि।

देवेंद्र कुमार राय, प्राथमिक शिक्षक, किशोरपुरा, जिला – श्योपुर

कोर्स -3: "व्यावहारिक गणित और सूझबूझ," में मैंने बच्चों से खुले सवाल के ज़रिए उनके सीखने की दर को जाना। शिक्षक अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा कर उन्हें सोचने और संवाद करने का अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस कोर्स में सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है "आकलन की गहराई तथा आकलन," हम शिक्षकों की मदद कैसे कर सकता है। हमने रटने और गहरी समझ में फ़र्क को जाना कि गहरी सीख और आकलन में अवधारणा और कौशल दोनों ज़रूरी है।

पायल अग्रवाल, शा. कन्या मा. शाला पुरवार शेर चौक, कटनी

"घर - सीखने का संसाधन" कोर्स श्रृंखला "ज्ञान का ख़जाना" से हमें यह सीख मिलती है कि हम बच्चों को कहानी, किस्से और कथाएँ सुनाकर उनका ज्ञान वर्धन कर सकते हैं। बच्चों का सृजनात्मक कौशल का विकास सम्भव हो सके इसके लिए कहानी कुछ इस तरह हो, जो वो लिख सकें और इनका प्रयोग भी कर सकें। साथ ही साथ बच्चों को कहानी सुनाकर उसके सारांश को उन्हीं के शब्दों में लिखवा सकते हैं, इससे बच्चों में लिखने के अलावा अन्य कौशल भी विकसित हो सकेंगे।

कमलेश कुमार शुक्ला, प्रा. शिक्षक, शा. प्रा. शाला-रामपुर, ज़िला-उमरिया

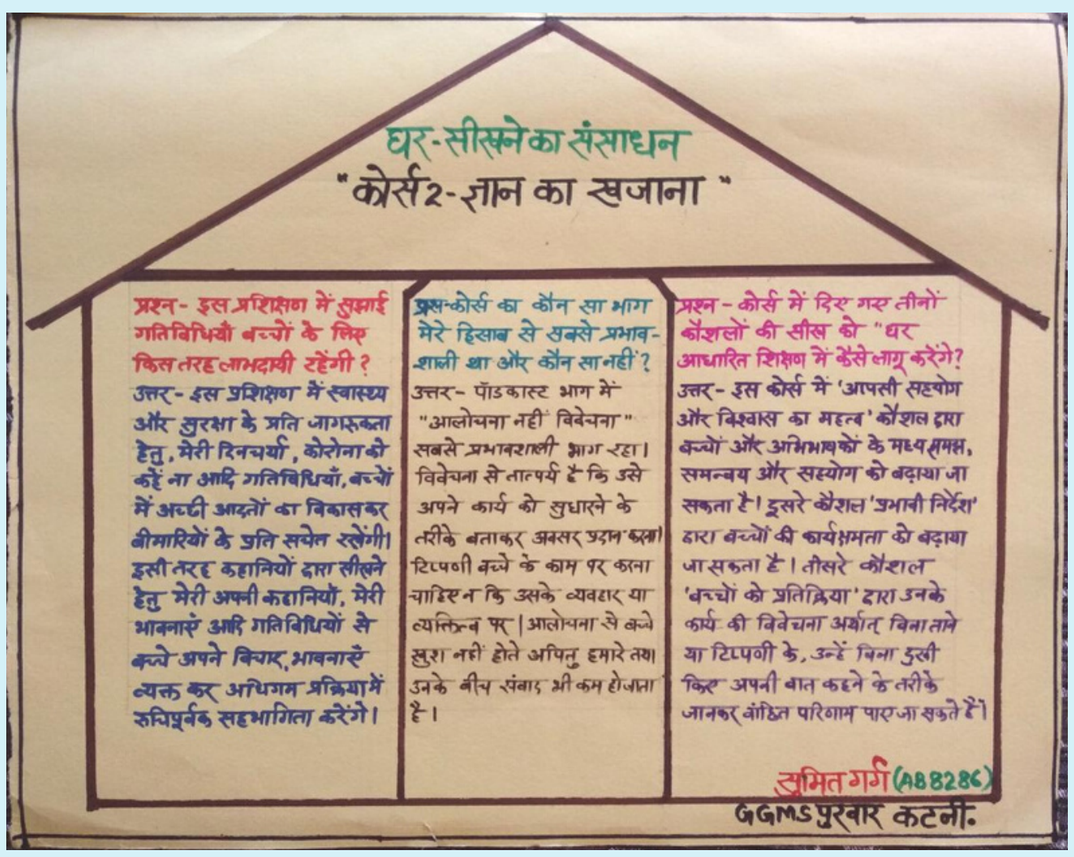

कटनी जिले के शिक्षक सुमित गर्ग द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

समग्र शिक्षा

DIKSHA

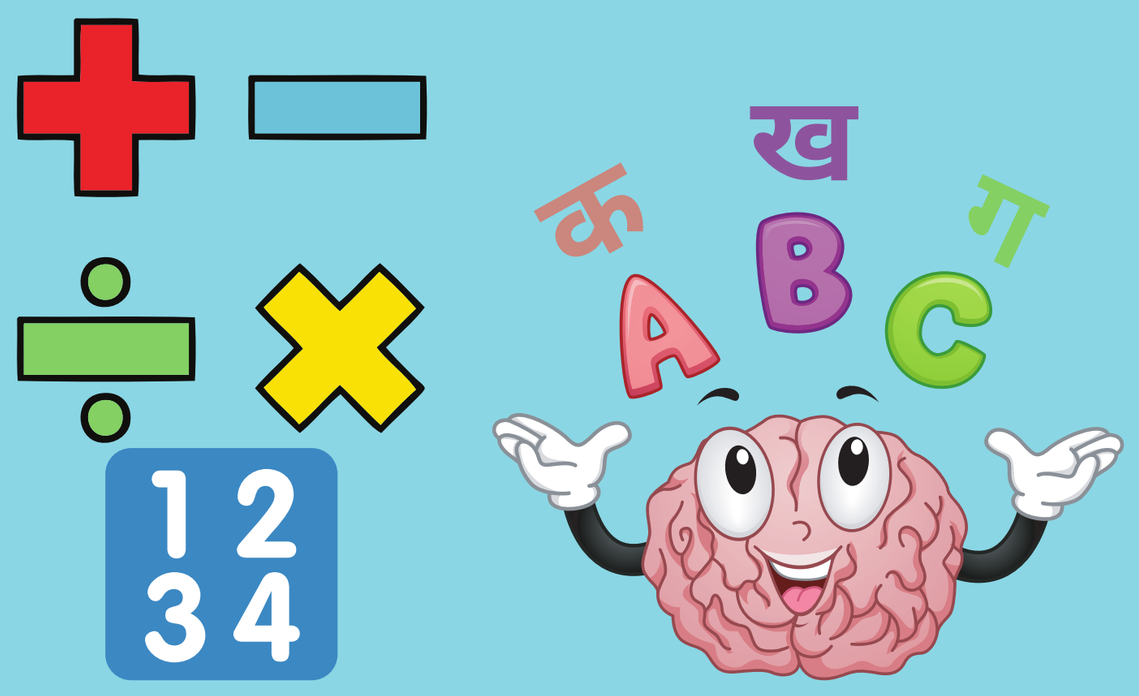

निष्ठा FLN 3.0

(कोर्स 1 से 4)

शिक्षकों के विचार

CM RISE नए क्षितिज | डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

peepul™

NISHTHA ONLINE

निष्ठा FLN 3.0

(कोर्स 1 से 4)

नई शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 3 तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ एल एन) विकसित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एफएलएन पर दिया गया अधिकारिक ज़ोर इसकी उपयोगिताओं के कारण है। राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 में कहा गया है कि यह नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से तभी जुड़ सकेगी, जब आधारभूत शिक्षा (लेखन, पठन, आधारभूत अंकगणित इत्यादि) उन्हें प्राप्त हो। नीति में प्रत्येक छात्र को एफएलएन से जोड़ने को एक चुनौती के तौर पर लिया गया है, इसके लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय मिशन लॉन्च किया है जिसे निपुण भारत नाम दिया है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करना है। इस हेतु कुल 12 कोर्स की श्रृंखला 01 अक्तूबर 2021 से प्रारंभ की गयी है। इसके प्रथम 4 कोर्स पर शिक्षकों के विचार यहाँ समाहित हैं।

प्रथम चार कोर्स इस प्रकार हैं -

1 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का परिचय

बच्चों की शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में भाषा और गणित कौशल का निर्माण करने और दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन (एफएलएन) मिशन आरंभ किया है। यह कोर्स मिशन के उद्देश्यों और लक्ष्यों से संबंधित है और इस संबंध में विभिन्न हितधारकों की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

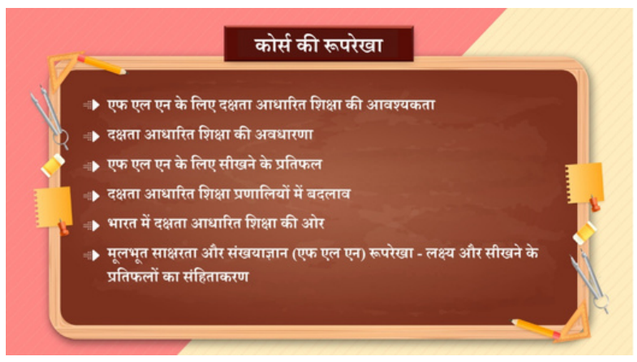

2 दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना

इस कोर्स में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के तीन विकासात्मक लक्ष्यों पर चर्चा की गई है। इसमें प्रतिभागियों को सीखने के प्रतिफलों के संहिताकरण से परिचित भी कराया गया है।

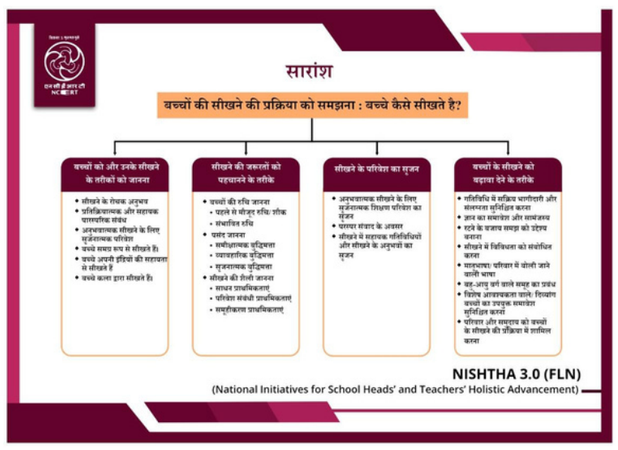

3 बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते हैं?

बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं और सीखने की शैली में भिन्नता होती है तभी तो वे अलग ढंग से सोचते और व्यवहार करते हैं, विश्लेषण भी अलग ढंग से करते है और उसी के अनुसार निर्णय लेते हैं। इन सभी बातों की समझ बच्चों को सीखने के अनुभव प्रदान करने से पहले उनकी सीखने की जरूरतों को जानने में शिक्षक की मदद करती है। इसी बात को ध्यान में रखकर इस कोर्स को तैयार किया गया है।

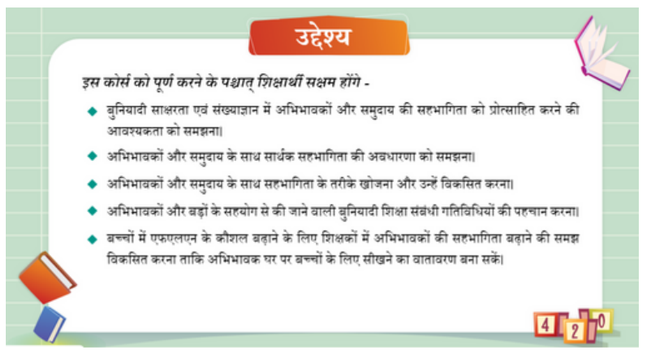

4 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता

इस कोर्स में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के तीन विकासात्मक लक्ष्यों पर चर्चा की गई है। इसमें प्रतिभागियों को सीखने के प्रतिफलों के संहिताकरण से परिचित भी कराया गया है।

इस कोर्स से मैंने जाना कि बच्चे प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही अपने परिवेश, घर पड़ोसी, रिश्तेदार, समाज व समुदाय से बहुत कुछ सीखते हैं, जैसे तर्क-वितर्क करना, प्रश्न करना, नैतिक ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान, बोलना, अपनी प्रतिक्रिया देना आदि। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि शिक्षक के साथ ही वे सभी व्यक्ति बच्चे के विकास में योगदान देते हैं जो कि बच्चों के निकट रहते हैं।

रीना देवी कटरे, प्रा. शिक्षक, शा. उन्न. मा. शाला भाटीवाड़ा, सिवनी

निष्ठा एफ एल एन 3.0 प्रशिक्षण एक शिक्षण शास्त्रीय अधिगम है, जिससे प्राप्त प्रतिफल से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। यह एक राष्ट्रीय पहल है जिसके लिए समाज के विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की भी सहभागिता की अपेक्षा है, सभी को मिलकर एक टीम की तरह कार्य करने से निश्चय ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संकल्पना "निपुण भारत" साकार होगी।

गंगोत्री प्रसाद तिवारी, प्राथमिक शिक्षक, शा. प्रा. शाला फुलहा नईगढ़ी, जिला रीवा

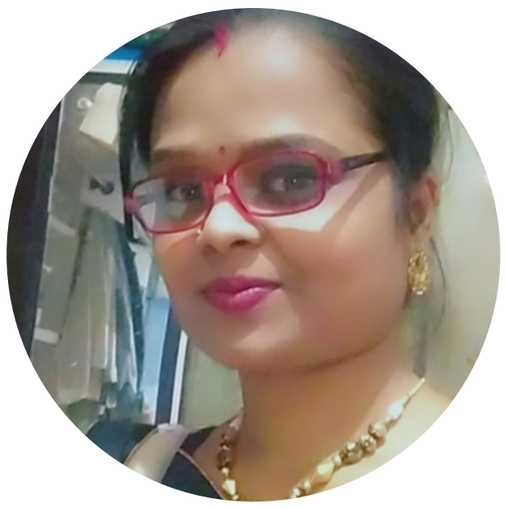

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बच्चे का कक्षा तीन के स्तर तक भाषा में अर्थ समझकर पढ़ने एवं गणित की बुनियादी समस्याओं को हल करने की क्षमता को दर्शाता है। इसे कक्षा में लागू करने के लिए हम कक्षा में गतिविधियाँ जैसे खेल, खोज, दैनिक जीवन से संबंधित प्रश्नों को पूछकर, उनमें बोलने, समझने तथा अपने बारे में लिखने का अभ्यास कार्य आदि करा सकते हैं, जिससे बच्चे कक्षा में भयमुक्त एवं आनंदमयी वातावरण में सीख पाएंगे। इसी तरह दैनिक जीवन से संबंधित सवालों को आधार बनाकर हल कराया जा सकता है।

विनिषा साहू, प्रा. शिक्षक, EPES देवरी, जिला जबलपुर

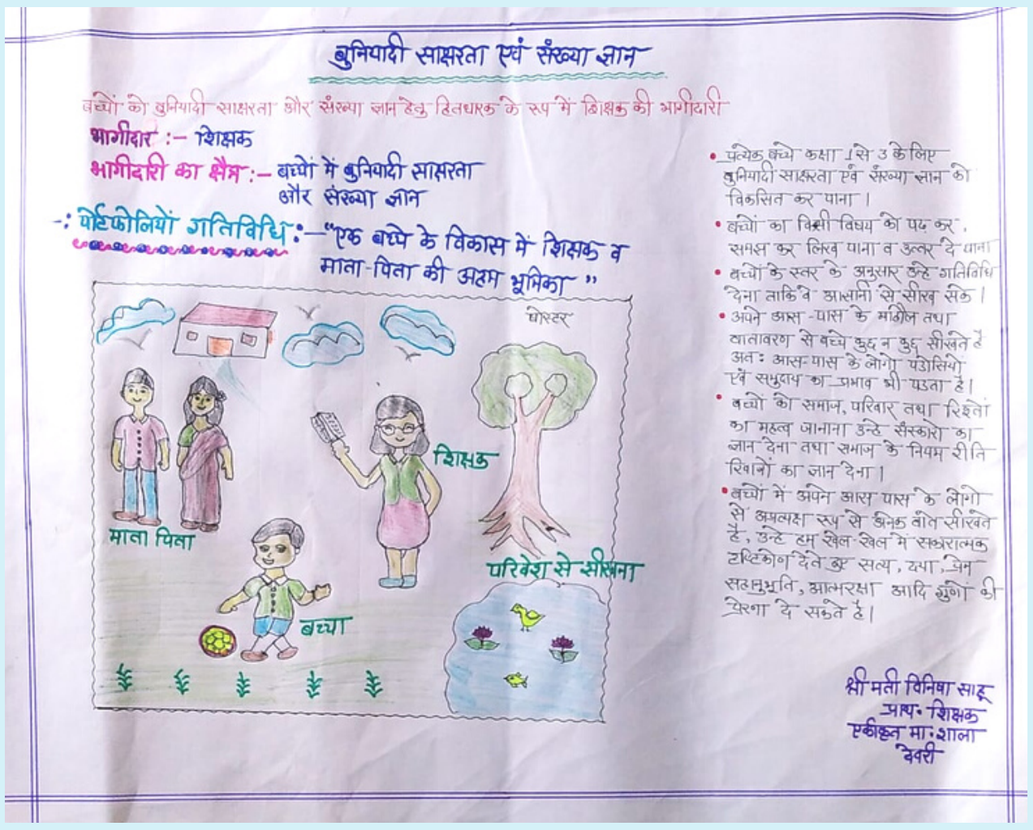

जबलपुर जिले की शिक्षिका विनिषा साहू द्वारा निर्मित पोर्टफोलियो गतिविधि

इस प्रशिक्षण से मुझे यह सीखने को मिला कि बुनियादी शिक्षा से ही बच्चे के भविष्य में सीखने का मार्ग प्रशस्त होता है, यदि सीखने के बीच लगातार आ रहे लर्निंग गैप को कम नहीं किया जाए तो बच्चे सीखने में पिछड़ जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर बहुत गहरी समझ बनी, जैसे- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे के लिए बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय समझ प्राप्त करना और बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान से सभी बच्चों को पढ़ने प्रतिक्रिया करने स्वतंत्र रूप से लिखने संख्या माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने और समस्या के समाधान के लिए स्वतंत्र और सक्षम बनाने हेतु बुनियादी शिक्षा बच्चे के समग्र विकास पर ज़ोर देती है।

वीरेन्द्र कुमार मिश्रा, प्राथमिक शिक्षक, मा. शा. बराखेरा, राजनगर, छतरपुर

प्रशिक्षण द्वारा हमने जाना कि बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के कौशल का होना बहुत जरूरी है। इसमें मुख्य भूमिका शिक्षक की होती है। वह कक्षा में भयमुक्त एवं सक्षम वातावरण का निर्माण करें, जिससे बच्चे निडर होकर अपने विचार रखें। इसके साथ ही अभिभावक, समाज और अन्य संस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता होती है।

प्रमिला ठाकुर, प्रा. शिक्षक, शा.हाई स्कूल पचामा, सीहोर

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में भाषा विकास, ध्वनि, पढ़ने का प्रवाह, पाठ बोध, लेखन, आकार, संख्या बोध आदि है। निष्ठा FLN 3.0 प्रशिक्षण के अंतर्गत बच्चों को खेल, खोज और संख्या, माप, आकार एवं गतिविधि आधारित शिक्षा कराने की प्रेरणा को बल मिला है। 2026-27 तक कक्षा तीन के बच्चों में शिक्षक गतिविधि आधारित एवं मातृभाषा में समझ के साथ पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा।

अल्का सिंह, प्राथमिक शिक्षक, शासकीय हाई स्कूल हाटी, सोहावल, जिला सतना

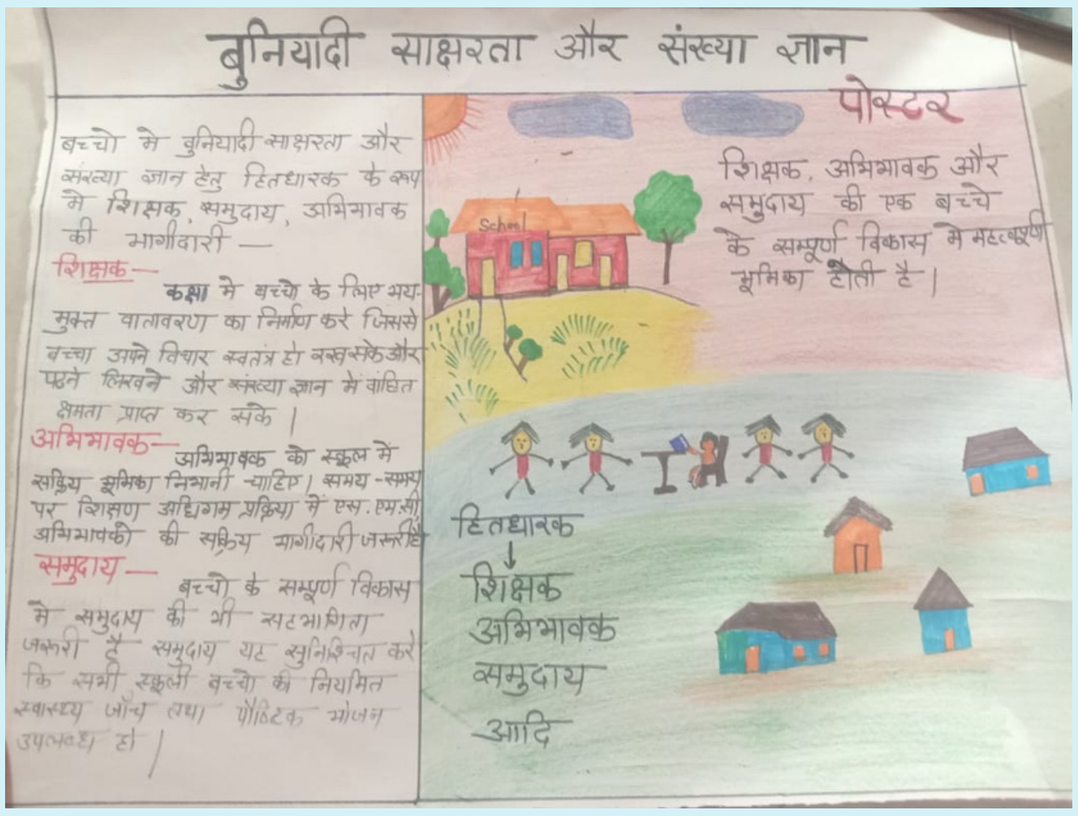

सीहोर जिले की शिक्षिका प्रमिला ठाकुर द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

"बुनियादी साक्षरता संख्या ज्ञान" प्रशिक्षण में मुझे अपनी कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की विधि बहुत ही अच्छी लगी और अंक, आकार और माप को समझने में जो तर्क दिए गए हैं, बहुत ही रुचिकर लगे। जिससे मुझे अपनी कक्षा में बच्चों के बीच गणित विषय की रोचकता बढ़ाने की समझ बढ़ी। इससे मेरी कक्षा आनंददायी बन गई है। बच्चे बड़े उत्साह से गणित में रुचि ले रहे हैं।

भारती यादव, प्राथमिक शिक्षिका, प्रा. वि. बटुरा, विकासखंड–बुढ़ार, शहडोल

इस कोर्स में मैंने जाना कि बुनियादी साक्षरता का समय अर्थात बच्चों के जीवन में प्रारंभिक वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इन प्रारंभिक वर्षों में प्राप्त भाषाओं और संख्याओं का ज्ञान जीवन पर्यंत काम आता है। अतः बच्चे के सम्पूर्ण विकास में शिक्षक के साथ-साथ विद्यालय, माता पिता, परिवार और समुदाय के वे सभी लोग जो बच्चे के संपर्क में ज्यादा रहते हैं. महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

चन्द्रकिशोर बोपचे, शा. प्रा. शाला कोसमटोला, विकासखंड– बरघाट, सिवनी

FLN 3.0 बुनियादी साक्षरता कोर्स से मैंने जाना कि यदि समुदाय, अभिभावकों एवं शिक्षक की सहभागिता बच्चों के प्रति सार्थक एवं विश्वसनीय होगी तो हमारे बच्चों के लिए जरूरी कौशलों जैसे पढ़ना, लिखना, बोलना एवं सोचना आदि का विकास जरूर होगा, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास के रूप में प्रफुल्लित होगा । यदि बच्चों में गतिविधियों के माध्यमों से सिखाने की प्रक्रिया को सरलतम तरीकों से लागू किया जाए तो बच्चा रुचि पूर्ण, मनोरंजनपूर्ण, तर्कपूर्ण रूप से सीखेगा ।

पंकज कुमार विश्वकर्मा, प्रा. शिक्षक, EPES लहसर, ब्लॉक-कुण्डम, जिला-जबलपुर

सिवनी के शिक्षक चन्द्रकिशोर बोपचे द्वारा निर्मित पोर्टफोलियो गतिविधि

विगत दो वर्षों में लर्निंग कार्नर की गतिविधियाँ बहुत ही मंद पड़ गयी थीं, निष्ठा FLN 3.0 प्रशिक्षण 3 'बच्चे कैसे सीखते हैं' से इसके लिए पुनः प्रेरणा मिली। रिबन, स्कार्फ, बीज, तराजू, आइसक्रीम स्टिक, पुराने अखबार, मिट्टी के पुराने खिलोने, आदि से छात्रों को सिखाने का प्रयास कर रहा हूँ। अभी हाल ही में कोर्स से प्रेरणा लेकर दूध ठंडा करने के विभिन्न तरीके और बंद दरवाजा खुलवाने के विभिन्न तरीकों पर सामूहिक चर्चा बच्चों के साथ की है।

सत्यनारायण कश्यप, प्राथमिक शिक्षक, एकीकृत शा. मा. वि. फ़िल्टर स्टेशन, इंदौर

एफ एल एन प्रशिक्षण 3 एवं 4 काफी सार्थक हैं, इसके माध्यम से छात्र-छात्राओं में सीखने की समझ विकसित करना एवं समुदाय की सहभागिता किस प्रकार निश्चित की जाए इस प्रशिक्षण में बहुत अच्छे तरीके से समझाया गया है। इस प्रशिक्षण से समस्त शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

लक्ष्मण सिंह यादव, बीआरसीसी जनपद शिक्षा केंद्र विदिशा

निष्ठा एफ एल एन 3.0 कोर्स 'बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते हैं?' के माध्यम से हमने जाना है कि बच्चों को सीखने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों जिससे बच्चे बालकेंद्रित और भयमुक्त वातावरण में बेहतर रूप से सीख सकते हैं, इसके लिए हमें अभिभावकों और समुदाय के साथ मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करना है, जिसमे बच्चे 'घर को स्कूल' और 'स्कूल को घर' की तरह समझ कर व्यवहार करें । सीखने के लिए ऐसे परिवेश का निर्माण करना जिसमें बच्चे परस्पर संवाद स्थापित कर सकें, उन्हे अपनी बात रखने के अवसर उपलब्ध करवाना, सीखने में सहायक गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का सृजन करना, बच्चे स्वयं प्रयास करके सीखें, खेल आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चे जब सीखने का प्रयास करते हैं तो उनकी पांचों इंद्रियां सक्रिय होती हैं, जिससे वे सकारात्मकता के साथ वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

वंदना शर्मा, शा. प्रा. वि. आवास जीरापुर, राजगढ़

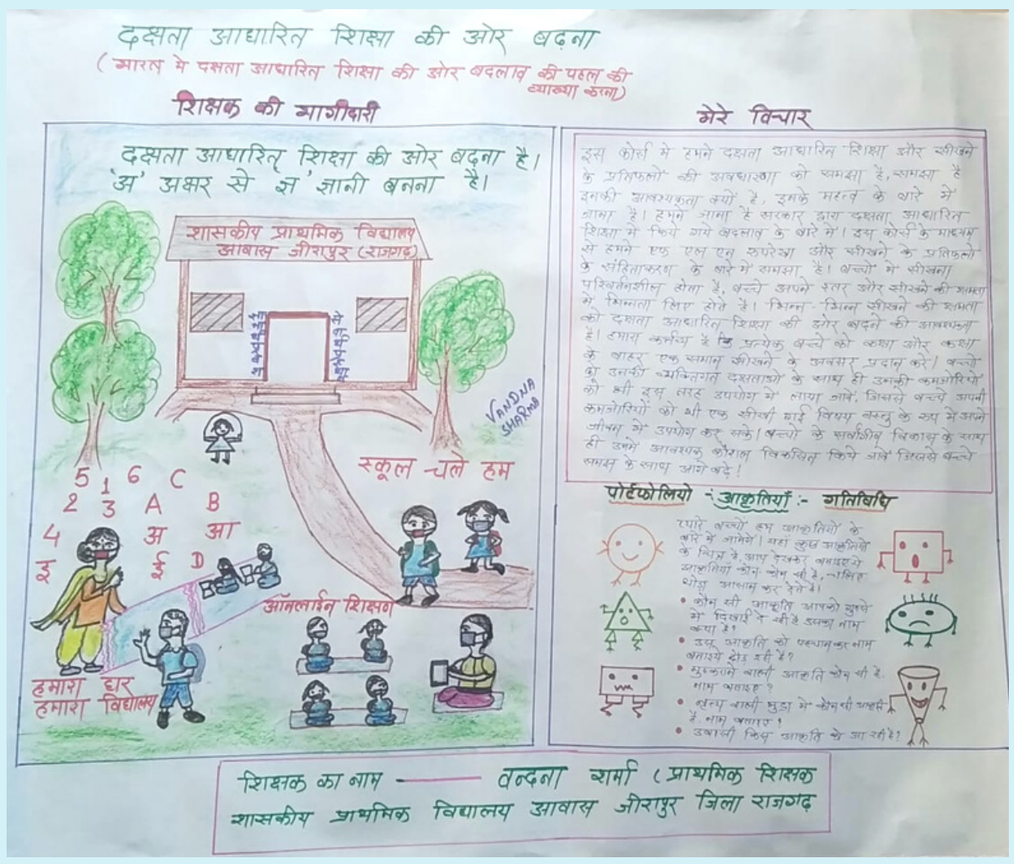

राजगढ़ की शिक्षिका वंदना शर्मा द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना-बच्चे कैसे सीखते हैं ? इस प्रशिक्षण के माध्यम से हमने बच्चों के सीखने के तरीके हो जाना जैसे- इंद्रियों की सहायता, कला, सृजनात्मक शिक्षण, पारस्परिक संबंध, रुचि, बुद्धिमत्ता, शैली, संवाद, उनकी संस्कृति या रीति-रिवाजों की चर्चा कक्षा में हो । (अनुभवी सृजन) बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके इन विभिन्न प्रयासों से हम बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

ममता शर्मा, प्रा. शाला रुगनाथपुरा, खिलचीपुर, जिला राजगढ़

निष्ठा FLN 3.0 कोर्स 03 में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को बहुत सुंदर तरीके से बताया गया है। सीखने- सिखाने की इन बाल मनोवैज्ञानिक गतिविधियों से परिणाम सकारात्मक प्राप्त होंगे तथा कोर्स 04 मेंसमुदाय व अभिभावकों की सहभागिता की अभिवृद्धि हेतु विषयवस्तु को प्रेरक बनाकर प्रस्तुत किया गया है। जिससे शाला में इनकी सकारात्मक सहभागिता बढ़ेगी, जो बच्चों की शैक्षणिक गुणवत्ता के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी।

सतीश शर्मा, (सहायक शिक्षक) प्रा. शा. दुधवारा, चावरपाठा, जिला- नरसिंहपुर

प्रत्येक बच्चे में अपने अलग-अलग गुण होते हैं और बच्चों के सीखने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं। मैं अपनी कक्षा में बच्चों की योग्यता एवं सीखने के अनुभवों के आधार पर अध्यापन करवाता हूं। मैं बच्चों के साथ हिल-मिलकर पाठ्यपुस्तक में आई वस्तुओं की चीजें बनाकर/ पढ़कर/ आपस में चर्चा कर, पाठ में आए चरित्र के हावभाव द्वारा व्यक्त कर अध्यापन का कार्य करवाता हूं। इस कोर्स की सीख को मैंने कक्षा कक्ष में ले जाकर बच्चों के साथ आजमाया। मैं पाठ के हर संकेतक को बच्चों को व्यवहारिक (प्रैक्टिकल) करके दिखाता हूं। बच्चे स्वयं करके बेहतर एवं जल्दी सीखते हैं।

मोईन अली बोहरा, बा. प्रा. वि. पिटोल, झाबुआ

मंदसौर जिले के शिक्षक राकेश गुप्ता द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

जब प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को कक्षा कक्ष में लेकर गए तभी अनुभव हुआ कि छात्रों में गणित कौशलों का विकास तब अधिक संभव है जब समुदाय माता-पिता व बच्चों की मजबूत व सार्थक भागीदारी बढ़े। इस प्रशिक्षण में सीखने के लिए सामुदायिक साधनों की एक विस्तृत श्रृंखला है जो समुदाय की भागीदारी से ही विकसित की जा सकती है। जब छोटे बच्चे समुदाय के बड़ों से और उनके साथ सीखेंगे तो सीखने की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

स्मिता दाधीच, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय प्रेमसर, श्योपुर

FLN कोर्स श्रृंखला 3 में बच्चों के सीखने के तरीके पर जोर दिया गया है, अगर बच्चों को पूर्ण आजादी के साथ घर या विद्यालय में विभिन्न रोचक तरीके से सीखने के स्वतंत्र अवसर दिए जाएँ तो बच्चे बेहतर सीखते है । शिक्षकों के द्वारा कोर्स पूर्ण करने के दौरान बच्चों के सीखने के लिए परिवेश के सृजन करने की क्षमता का विकास होता है । शिक्षक को इसके लिए बच्चों की सहयोगी के रूप में कार्य करना चाहिए जिसे से बच्चे बिना संकोच के प्रश्न पूछ सकें। हमें इस कोर्स 3 से यह भी सीखने को मिलता है कि बच्चों की सीखने की शैली को कैसे जानना है तथा कैसे बच्चे व्यवहारिक तथा प्रत्यक्ष अनुभव से सीखते हैं ।

दीपक गंगारेकर, जनशिक्षक जन शिक्षा केंद्र बलेडी, बड़नगर, उज्जैन

हमने जाना कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में समुदाय एवं अभिभावकों की (एक स्वयंसेवी बनकर) सहभागिता बिना शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। जैसे कि माता पिता अपने बच्चों को घर में कहानी सुनाते हैं, नैतिक शिक्षा देते हैं, जैसे बड़ों के पैर छूना, सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग करना आदि। विद्यालय के अंदर अभिभावक स्वयंसेवी बनकर शिक्षकों के सहयोग से छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाना एवं विद्यालय में पौष्टिक भोजन बनवाना। अच्छे, गुणवान शिक्षकों एवं प्रतिभाशाली छात्रों को समुदाय के बीच सम्मानित करना । इस प्रकार के सहयोग से शिक्षक और समुदाय एक मंच पर आकर काम करें तो शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।

गिर्राज समाधिया, प्राथमिक शिक्षक, हनुमान खेड़ा, जिला श्योपुर

नीमच जिले की शिक्षिका नीलकमल आर्य द्वारा निर्मित कोर्स पोर्टफोलियो गतिविधि

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

समग्र शिक्षा

DIKSHA

धन्यवाद!

CM RISE
नए क्षितिज
डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

peepul™

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

SBI FOUNDATION
Service Beyond Banking

...के सहयोग से